चरैवति-चरैवति

सुषमा मुनींद्र

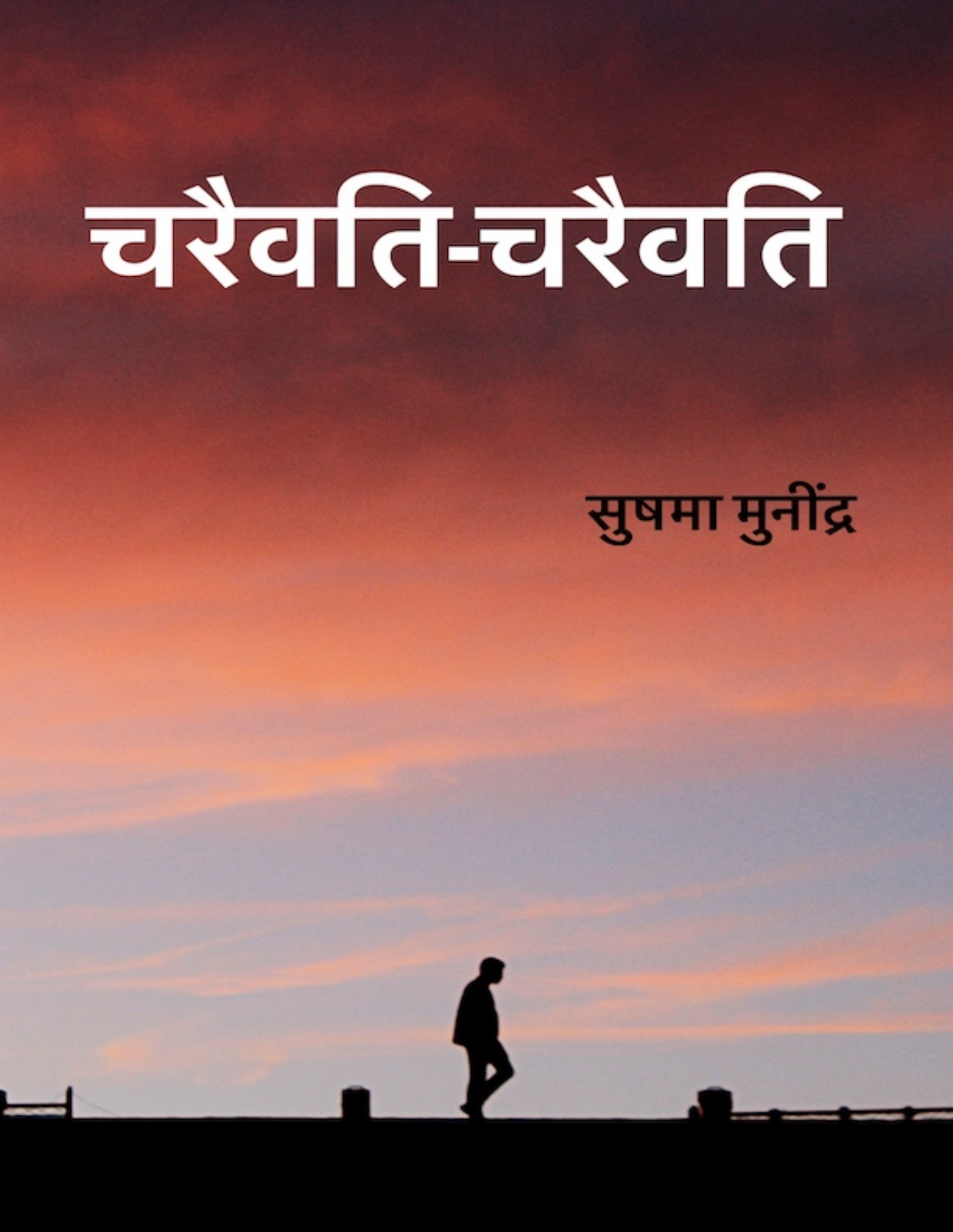

चरैवेति-चरैवेति

सुषमा मुनीन्द्र

अनुक्रम:

कहानी	**पृष्ठ संख्या**
चरैवेति-चरैवेति	3
इस घटिया होते समय में	44

चरैवेति-चरैवेति

पद्मावती जानती है लुम्मेर वाहन चलाने का चस्का नहीं छोड़ेगा फिर भी उसे बुकिंग में जाते हुये देखती है तो दोहराने लगती है -

''रास्ता मैंने देखा है। कठिन है। ड्राइवरी छोड़ो, कोई दूसरा काम पकड़ो।''

लुम्मेर तत्काल प्रतिक्रिया देता है ''निकालो पूँजी। सब्जी या किराने की दुकान शुरू कर देता हूँ।'' ''मेरे पास धन नहीं है।''

''तब गाड़ी चलाने दो।''

लुम्मेर पिता को गाड़ी चलाते देख कर बिना प्रशिक्षण के स्वतः गाड़ी चलाना सीख गया। पिता टैक्सी चलाते थे। हफ्ता - दस दिन को बुकिंग पर चले जाते तब लुम्मेर कल्पना करता वे खूब मौज-मजा कर रहे होंगे। सेठ की कीमती गाड़ी चलाते हैं। होटेल में खाते हैं। वह मानो बिल्कुल अनभिज्ञता में संकल्पबद्ध हो गया था - किस्म - किस्म की कीमती गाड़ियाँ चलायेगा। किसी दिन पिता सेठ की कीमती गाड़ी लेकर घर खाना खाने आये। वे रसोई में खा रहे थे लुम्मेर निरापद तरीके से गाड़ी उड़ा ले गया। लौटा तब माँ मातमी और पिता परशुरामी मुद्रा में घर के बाहर विद्यमान थे। उसे सलामत देख माँ को, गाड़ी को सलामत देख पिता को धीरज हुआ लेकिन उन्होंने लुम्मेर के कान उमेठ दिये -

''तू मेरी नौकरी खत्म करेगा। अब मैं गाड़ी घर नहीं लाऊँगा।''

उन्हें पूँछना याद न रहा - तुमने गाड़ी चलाना कब सीखा और लुम्मेर ने बताया नहीं - यूँ ही सीख लिया। पिता जब वाहन चलाते हुये दुर्घटनाग्रस्त होकर बोमडिला की सात हजार फीट गहरी घाटी में विलय हुये लुम्मेर वाहन चालन में दक्षता प्राप्त बीस - इक्कीस साल का लम्बा युवक था। तब से ड्राइवरी करते हुये दस बरस हो रहे हैं। इन दिनों टैक्सी के तौर पर एक सेठ की बुलेरो चलाता है। चालक सीट पर बैठते ही खुद को पायलेट समझने लगता है। उसके हाव-भाव में एक किस्म की बादशाही तारी हो जाती है। हैसियत कुछ नहीं लेकिन अच्छे पिक अप के साथ संतुलित गति से वाहन चलाने को हैसियत बल्कि उपलब्धि बल्कि गौरव की तरह लेता है। गौरव